ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
July-September 2024 : 1(4)57

©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

सीताराम गुप्ता
ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,दिल्ली - 110034

Corresponding Author :
सीताराम गुप्ता
ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,दिल्ली - 110034

लघुकथा :

अल्टीमेटम

कार्यक्रम की समाप्ति पर सभी मेहमान विदा होने लगे ये कहना उचित प्रतीत नहीं होगा क्योंकि ये सब लोग मेरे चाचा सोम प्रकाश जी की बरसी पर इकट्ठा हुए थे जिसमें प्रमुख रूप से घर की बहन-बेटियाँ और क़रीबी रिश्तेदार ही थे। चाचाजी को गुज़रे छह महीने हो चुके थे और आज उनकी पहली बरसी थी। छह महीने में बरसी? आजकल तो लोग प्रायः दसवें या तेरहवीं पर ही बरसी की रस्म भी पूरी कर देते हैं लेकिन चाचीजी की ज़िद की वजह से बरसी का कार्यक्रम करना पड़ा। उसी दिन सुबह ही मनोज का फोन आया था कि भाई आज पिताजी की बरसी कर रहे हैं इसलिए आप ज़रूर आ जाना। हवन आदि के बाद सब आगंतुकों को भोजन करवाया गया। हर परिवार के लिए एक-एक मिठाई का डिब्बा भी मँगवाया गया था। भोजन करने के बाद सब अपने-अपने मिठाई के डिब्बे लेकर चले गए। प्रायः सभी लोग फल लेकर आते हैं। उन्हीं फलों में से जाते हुए सबको मिठाई के डिब्बे के साथ-साथ कुछ फल भी दिए गए थे। अंत में बच गया मैं और मेरा एक फुफेरा भाई रामावतार। हम दोनों काफी दिनों के बाद मिले थे अतः सबके जाने के बाद आपसी बातचीत में पंद्रह-बीस मिनट कैसे व्यतीत हो गए पता ही नहीं चला। हमारे मिठाई के डिब्बे हमें पहले ही पकड़ा दिए गए थे जो हमारे सामने मेज़ पर ही रखे हुए थे। साथ ही पॉलिथीन की थैलियों में कुछ फल भी रखे हुए थे।

तभी अंदर के कमरे में से बाहर आते हुए चाचीजी की गंभीर आवाज़ सुनाई पड़ी। चाचीजी अपने बड़े बेटे मनोज से कह रही थीं, ‘‘ अरे मनोज! श्रवण और रामावतार के मिठाई के डिब्बे भी दे दे।’’ मैंने आवाज़ की ओर मुख़ातिब होकर कहा, चाचीजी हमने मिठाई के डिब्बे और फल दोनों चीज़ें ले ली हैं।’’ तीन-चार मिनट बाद चाचीजी की आवाज़ फिर सुनाई पड़ी, ‘‘ अरे मनोज! कुछ फल और डाल दे श्रवण और रामावतार के लिफाफों में।’’ ये कहकर चाचीजी ने स्वयं ही वहाँ पास रखे फलों में से हमारे लिफाफों में एक-एक संतरा और डाल दिया। मैं फिर रामावतार से बातें करने लग गया। मुश्किल से तीन मिनट गुज़रे होंगे कि चाचीजी का स्वर एक बार फिर मुखरित हुआ, ‘‘ अरे मनोज! श्रवण और रामावतार के लिफाफों में कुछ अमरूद और डाल दे।’’ ये कहकर चाचीजी ने पुनः स्वयं ही हमारे लिफाफों में एक-एक अमरूद और डाल दिया। तभी रामावतार ने एक झटके में खड़े होकर मुझसे कहा, ‘‘भाई श्रवण उठ। सब लोग चले गए हैं। चल हम भी चलते हैं। देख मामीजी भी कितनी परेशान हो रही हैं। इन्हें भी आराम करने दो।’’ इस पर चाचीजी ने कहा, ‘‘ अरे बेईमान तू तो ऐसे कह रहा है जैसे मैं तुम्हें ज़बरदस्ती जाने के लिए कह रही हूँ।’’

•